पाठ 2. काकी

पाठ का परिचय

उस दिन बड़े सवेरे जब शामू की नींद खुली तो उसने देखा कि घर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी काकी ज़मीन पर लेटी हुई है और उसके ऊपर कपड़ा ढका हुआ है। जब लोग उसे उठाकर ले जाने लगे तो शामू ने बहुत ऊधम मचाया। शामू से कहा गया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है। लेकिन थोड़े समय बाद ही उसके पड़ोसी मित्रों ने उसे बताया कि उसकी माँ राम के यहाँ गई है। यह जानकर वह कई दिनों तक रोता रहा। एक दिन उसने आसमान में उड़ती हुई पतंग देखी। उसका मन खिल गया। शामू ने अपने पिता बिसेसर से पतंग लाकर देने को कहा और न मिलने पर उसने उनकी कोट की जेब से चार आने निकाल लिए। शामू ने भोला से कहकर चुपचाप एक पतंग और डोर मँगवाई और भोला के पूछने पर बताया कि वह पतंग के सहारे काकी को नीचे बुलाएगा। तब भोला ने उससे कहा कि डोर पतली है, काकी इसे पकड़कर उतर नहीं पाएगी। तब शामू ने एक रुपया कोट की जेब से निकाला और भोला को मोटी रस्सी लाने के लिए कहा। जब शामू और भोला पतंग पर 'काकी' नाम लिखकर उसमें रस्सी बाँध रहे थे तो बिसेसर कमरे में आ गए। भोला के द्वारा बताए जाने वाले सच के बाद जब उन्होंने पतंग उठाकर देखी तो वह हैरान हो गए। उस पर 'काकी' लिखा था।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पहले कहानी को संक्षेप में सुनाएँ। शामू के चरित्र पर विशेष चर्चा करें। अब कहानी का आदर्श वाचन करें। कहानी में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। महत्वपूर्ण पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें। जैसे – बारिश के बाद ज़मीन के ऊपर का पानी सूखने में देर नहीं लगती, लेकिन ज़मीन के नीचे की नमी बहुत दिनों तक बनी रहती है। बच्चों से कहानी को कक्षा में मौखिक रूप से सुनें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- शामू की तरह क्या कभी तुमने भी सोचा है कि मरकर लोग कहाँ जाते हैं?
- तुम्हारे प्रियजन जब तुमसे बिछड़ते हैं तब तुम्हें कैसा लगता है?
- अपनी दादी-नानी से क्या तुमने कभी यह जानने की इच्छा व्यक्त की कि मरने वाले लोग कहाँ जाते हैं?